DR Krishnadeo kumar bharti
Assistant professor (G.T)
Dept of Political science
C.M.j College Donwarihat
Khutauna, Madhubani
Email-Kdkbharti08@gmail.com
B.A Part-1 Paper-2Date-21-08-2020

डॉ० भीमराव अम्बेडकर के राजनीतिक विचारों की विवेचना---

अदभुत प्रतिभा, सराहनीय निष्ठा और न्यायशीलता तथा स्पष्टवादिता के धनी डॉ०भीमराव अम्बेडकर ने अपने आपको दलितों के प्रति समर्पित कर दिया था।अस्पृश्य समझी जाने वाली महार जाति में जन्म लेने के कारण उन्हें अपने जीवन में कदम कदम पर भारी अपमान और घोर यन्त्रणा की स्थितियों का सामना करना पड़ा था।इन अपमानों और सामाजिक यातनाओं को झेलते हुए वे जीवन में निरन्तर आगे बढ़े और उन्होंने निश्चय किया कि भारत के अस्पृश्य वर्ग के अमानवीय जीवन की इस स्थिति को समाप्त कर उन्हें मानवता के स्तर पर लाना है।इस महामानव ने भारत के दलित वर्ग के प्रति निष्ठा और समर्पण की जिस स्थिति को अपनाया था, उसके आधार पर उसे भारत का लिंकन और मार्टिन लूथर कहा गया और यहां तक की उन्हें 'बोधिसत्व 'की उपाधि से विभूषित किया गया।

डॉ०भीमराव अम्बेडकर का जन्म *14* अप्रैल *1891* ई० को इन्दौर के पास महू छावनी में हुआ था। भीमराव ने हाई स्कूल तक का अध्ययन सतारा में किया और सन् *1907* ई०मे हाई स्कूल की परीक्षा पास की,इसके बाद उन्होंने बम्बई के एलफिन्स्टन कॉलेज में दाखिला लिया।बड़ौदा के महाराजा गायकवाड़ द्वारा प्रदान की गई छात्रवृत्ति से उन्हें कॉलेज शिक्षा प्राप्त करने में मदद मिली।

गायकवाड़ छात्रवृत्ति पर ही भीमराव को *1913*ई० में अमेरिका के कोलम्बिया विश्वविद्यालय में दाखिला मिल गया।वे भारत के पहले अछूत और महार थे,जो पढ़ने के लिए विदेश गये थे।जून *1916* ई०में अम्बेडकर ने विश्व की प्रसिद्ध शिक्षण संस्था लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स एण्ड पोलिटिकल साइन्स में दाखिला लिया।अम्बेडकर में पढ़ने की ऐसी लगन थी कि वे दोपहर का खाना बिना खाये हुए पुस्तकालय में पढ़ते रहते थे।

इंगलैण्ड से लौटकर उन्होंने निश्चय किया कि वे अपनी जीविका के लिए वकालत करेंगे और शेष समय अछूतों और गरीबों की सेवा में लगायेंगे।सन् *1923* ई० में उन्होंने वकालत शुरू कर दी तथा साथ ही अछूतों के उद्धार के लिए संघर्ष शुरू कर दिया।सन् *1930* ई०में उन्होंने अखिल भारतीय दलित वर्ग संघ का अध्यक्ष पद धारण किया।

डॉ०अम्बेडकर प्रबल देशभक्त और भारत के राष्ट्रीय एकीकरण के समर्थक थे, लेकिन सार्वजनिक जीवन में महात्मा गाँधी और कांग्रेस के साथ उनके मतभेद बने रहे।मतभेद का एक आधार तो दलितों के लिए पृथक प्रतिनिधित्व का प्रश्न था।इसके साथ ही डॉ०अम्बेडकर का यह दृष्टिकोण था कि उन व्यक्तियों तथा संस्थाओं को अछूतों की बात कहने का हक नहीं है जो अछूत नहीं है। कुछ अवसरों पर तो डॉ०भीमराव अम्बेडकर ने कांग्रेस और महात्मा गाँधी के प्रति भारी कटुता की स्थिति को अपना लिया।डॉ०अम्बेडकर कहते थे कि कांग्रेस ने अछूतोद्धार के कार्य में ईमानदारी का परिचय नहीं दिया है।

डॉ०अम्बेडकर निरन्तर यह अनुभव कर रहे थे कि हिन्दू धर्म में दलितों को सम्मानजनक स्थिति प्राप्त नहीं है।वस्तुतः हिन्दू धर्म उनके स्वाभिमान के साथ मेल नहीं खा रहा था।इन परिस्थितियों में डॉ०अम्बेडकर ने पाँच लाख व्यक्तियों के साथ*14*अक्टूबर *1956*को बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया।*6*दिसम्बर *1956* को प्रातःकाल की बेला में उनका देहांत हो गया।निर्भयता, स्पष्टवादिता और अक्खड़पन उनके स्वभाव का अंग था, जो सदैव उनके साथ बना रहा।

डॉ०भीमराव अम्बेडकर के राजनीतिक विचार-

डॉ०अम्बेडकर ने अपनी पुस्तक *'Thoughts on Linguistic State'(1955)*में भाषायी राज्यों के सम्बन्ध में अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए कहा है कि--भाषायी प्रांतों के निर्माण से लोकतंत्र अधिक अच्छी प्रकार से क्रियान्वित होता है।एक भाषायी प्रान्त में मिश्रित प्रान्त की तुलना में सामाजिक एकजुटता अधिक अच्छी प्रकार बनी रहती है।भाषायी प्रांतों के निर्माण से तो खतरा नहीं है किन्तु खतरा इस बात से अवश्य है कि प्रत्येक प्रान्त की एक ही भाषा को सरकारी कामकाज की भाषा बना दिया जाय।उनके अनुसार यदि क्षेत्रीय भाषाओं को राज्य भाषा बना दिया गया तो प्रत्येक प्रान्त में ऐसी संकुचित संस्कृति का विकास होगा जिसकी परिणति अन्तोगत्वा भारत की एकता को खंडित करने में होगी।

डा०अम्बेडकर के अनुसार,"लोकतंत्र शासन का ऐसा रूप तथा पद्धति है जिसमें बिना रक्त बहाए क्रांतिकारी, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त होता है।"वे लोकतंत्र की संसदीय पद्धति के समर्थक व प्रशंसक थे।लेकिन उनका कहना था कि बिना सामाजिक तथा आर्थिक लोकतंत्र के राजनीतिक लोकतंत्र सफल नहीं हो सकता।संसदीय लोकतंत्र की सहायता के लिए वे सामाजिक तथा आर्थिक समानता सुढ़ृढ़ विपक्षी दल स्थायी सिविल सेवा तथा संवैधानिक नैतिकता को आवश्यक शर्त मानते थे।

डॉ०अम्बेडकर राज्य को समाज सेवा का एक साधन मानते थे यद्यपि वे जानते थे कि राज्य सभी महत्वपूर्ण कार्यों का संपादन करता है यहाँ तक कि सामाजिक आर्थिक परिवर्तन कर नूतन व्यवस्था की स्थापना का कार्य भी राज्य ही करता है तथापि वह सर्वशक्तिमान और निरंकुश नहीं है बल्कि समाज सेवा का एक साधन है।

यद्यपि उनका कांग्रेस व गाँधीजी की पद्धतियों से विरोध था, लेकिन वे स्वतंत्रता के विरोधी नहीं थे।कुछ विद्वानों ने उनके *1942* ई०के भारत छोड़ो आन्दोलन के विरुद्ध प्रचार करने पर उनके राष्ट्रीय स्वतंत्रता के प्रति दृष्टिकोण पर आपत्ति की थी लेकिन उनका यह विरोध प्रस्ताव में देश की स्वतंत्रता के लिए अपनायी जाने वाली रणनीति और व्यूह रचना के मतभेद से सम्बंधित था। डॉ०अम्बेडकर ने इस संबंध में भी प्रस्ताव दिया था कि भारत के सभी मुसलमान पाकिस्तान तथा पाकिस्तान के सभी हिन्दू भारत आ जाये,जिससे कोई झगड़ा और खून खराबा न हो, लेकिन उनकी इस बात पर किसी ने ध्यान नहीं दिया।डॉ अम्बेडकर देशभक्त थे तथा राष्ट्रीय एकीकरण के पक्षधर थे।

आगे, धन्यवाद।

2020-08-21
© From vivo Note

Scanned with CamScanner